ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-8* November-2020
Anthology : The Research

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य एवं भारत राष्ट्रः चुनौतियाँ

Challenges in Current Global and Indian Scenario

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 25/11/2020, Date of Publication: 26/11/2020

प्रियंका गौतम
अतिथि शिक्षक,
लखनऊ कॉलेज ऑफ
रिहैबिलिटेशन स्टडीज,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

वर्तमान समय में मनुष्य के समक्ष विभिन्न प्रकार की चुनौतियां उत्पन्न हो रही हैं, यह चुनौतियां जहां व्यक्तिगत जीवन में कुछ न कुछ सीख दे जाती हैं या फिर कोई गहरा सदमा अपने पीछे छोड़ जाती हैं। महामारी भी एक प्रकार से वैश्विक चुनौती होती है जो कभी–कभी विकराल रूप धारण कर लेती है। वैश्विक महामारी एक दूसरे देशों को राजनैतिक एवं आर्थिक रूप से आपस में सहयोग करने के लिए प्रेरित करती हैं, यदि सभी मिलकर इस तरह की महामारी का सामूहिक रूप से सामना करते हैं तो शीघ्र ही इसका समाधान निकाला जा सकता है तथा होने वाली जनहानि एवं धन हानि को कम किया जा सकता हैं। अगर समुचित कदम उठाने में विलंब हो जाता है तो विश्व के सामने बहुत बड़ा आर्थिक, सामाजिक एवं मानसिक नुकसान उठाना पड़ सकता है। कोरोना महामारी से आज भारत ही नहीं पूरा विश्व ही इसकी चपेट में है तथा शीघ्रता से इस बीमारी से निपटने के लिए दवा या टीका बनाने में पूरा विश्व लगा हुआ है जिससे कि इस महामारी से रोकथाम हो सके एवं भविष्य में होने वाले नुकसान को कम किया जा सके तथा विश्व पुनः पटरी पर लौट सके। इस महामारी के कारण आज भारत के सामने विभिन्न प्रकार की चुनौतियाँ हैं जैसे कि रोजगार, स्वास्थ्य एवम शिक्षा की चुनौतियाँ, आर्थिक एवं सामाजिक चुनौतियाँ आदि। इस महामारी से उत्पन्न हुई चुनौतियों को भारत किसी भी तरह से इसका सामना करने के लिए दृढ़ संकल्प है।

In the present time, different types of challenges are facing human beings, these challenges where they learn something in personal life or leave a deep shock behind them. An epidemic is also a kind of global challenge that sometimes takes a macabre form. Global epidemics motivate each other countries to cooperate politically and economically, if all together face such epidemic collectively, then it can be resolved soon and the loss of life and money Loss can be reduced. If there is a delay in taking appropriate steps, then the world may face huge economic, social and mental damage. Today, not only the whole world is in the grip of the corona epidemic, and the world is busy in making medicines or vaccines to deal with this disease quickly so that the epidemic can be prevented and the future losses will be reduced. So that the world could go back on track. Due to this epidemic, today India faces different types of challenges such as employment, health and education challenges, economic and social challenges etc. India is determined to face the challenges posed by this epidemic in any way.

मुख्य शब्द : वैश्विक महामारी, विश्व, भारत, कोरोना, टीका, चुनौतियाँ।
Global Epidemic, World, India, Corona, Vaccine, Challenges.

प्रस्तावना

मानव का जीवन आदि काल की सभ्यताओं से लेकर आधुनिक जीवनशैली तक हमेशा संघर्षपूर्ण रहा है। उसके जीवन में हमेशा उथल –पुथल ही मची रहती है, कभी वर्चस्व को लेकर तो कभी जीवन व्यापन को लेकर वह संघर्षरत रहा है। प्राकृतिक आपदाएं और मानव निर्मित आपदाएं मनुष्यों के जीवन में हमेशा ही बहुत विकराल स्थितियां उत्पन्न करती आ रही हैं।

उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार पिछली चार सदियों से हर 100 साल में अलग–अलग महामारियों ने दुनिया पर हमला किया और लाखों लोगों को बेमौत मार गई। हर बार हम समाधान ढूंढने में इतनी देर कर देते है, कि लाखों लोग काल के गाल में समा जाते हैं।[1] पिछले 400 सालों में एक ऐसी महामारी आती ही है, जो पूरी दुनिया में तबाही मचा कर जाती है, जैसे– 1720 में प्लेग, 1820 में हैजा, 1920 में स्पेनिश–फ्लू तथा वर्तमान वर्ष 2020 में कोरोना महामारी।

कोरोना वायरस एक बहुत ही सूक्ष्म वायरस होता है जो लगभग दुनिया के समस्त देशों में फैल चुका है इस कारण से इसे विश्व स्वास्थ्य संगठन ने पैनडेमिक यानी महामारी घोषित कर दिया है। महामारी होने की अधिक संभावना तब होती है जब वायरस बिलकुल ही नया हो,आसानी से लोगों में संक्रमित हो रहा हो, लोगों के बीच संपर्क से प्रभावी और निरंतरता से फैल रहा हो तथा उसका उचित इलाज उपलब्ध ना हो।

कोरोना वायरस का संबंध वायरस के एक ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से जुकाम, खांसी से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया है, इसका संक्रमण माह दिसंबर (2019) में चीन के वुहान में शुरू हुआ था जो अब पूरे विश्व में फैल गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार इसके मुख्य लक्षण बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ इत्यादि हैं। अब तक इस वायरस को फैलने से रोकने के लिए कोई दवा और टीका नहीं बना है।[2]

जिस प्रकार से दार्शनिक या मनोवैज्ञानिक समस्याओं का समाधान दर्शन या मनोविज्ञान के स्तर पर ही हो सकता है ठीक उसी प्रकार से वैश्विक स्तर पर उत्पन्न हुई इस समस्या का समाधान भी वैश्विक प्रयासों के माध्यम से ही हो सकता है। सहयोग व समन्वय का यह प्रयास सकारात्मक दृष्टिकोण के तरीके हैं। इस सकारात्मक दृष्टिकोण की महत्ता का अंदाजा तो इसी बात से ही लगाया जा सकता है कि भारत के प्रधानमंत्री ने इस महामारी का मुकाबला करने में "सहयोग से सृजन" के विकल्प को बहुत ही महत्वपूर्ण माना है।[3]

कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिए पब्लिक या जनसमुदाय को लॉकडाउन, बुनियादी स्वच्छता तथा सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करना ही कारगर उपाय हो सकता है। शहर ही नहीं अब तो कई देश पूरी तरह से लॉकडाउन की स्थिति में पहुंच चुके हैं। कोरोना वायरस (कोविड–19) महामारी के वैश्विक प्रसार के साथ–साथ हर समाज की विसंगतियां भी सामने आ रही हैं, चाहे वह विकसित समाज हो या विकासशील समाज।

कोरोना महामारी की वजह से जो विपरीत परिस्थितियां उत्पन्न हुई हैं, उसमें भारत ही नहीं बल्कि पूरा विश्व आर्थिक, सामाजिक तथा मानसिक रूप से काफी परेशान हैं, ऐसे संकट की स्थिति में पूरे विश्व को कोई तरकीब नहीं सूझ रही है। वर्तमान परिदृश्य में जहां पूरा विश्व मंदी की चपेट में आ गया है, उसमें भारत भी अछूता नहीं है। ऐसी परिस्थितियों में भारत अपने आप को कुछ हद तक मजबूत स्थिति में पाता है।

जैसा कि सभी जानते है, सम्पूर्ण विश्व के साथ–साथ अपने देश को भी कोरोनावायरस से फैली महामारी ने हिला कर रख दिया है और इस समय देश में सार्वजनिक स्वास्थ्य की स्थिति आपातकाल जैसी है एवं ऐसी चुनौती शायद ही कभी देश के सामने आई होगी। जब इस तरह की चुनौती आती है तो उससे मुकाबला करने के लिए अलग–अलग स्तर पर नये–नये मापदंड भी तय करने पड़ते हैं। एक तरफ तो इस महामारी से निपटने की जिम्मेदारी डॉक्टर, नर्स, सफाईकर्मियों एवं अन्य स्वास्थ्यकर्मियों ने बखूबी संभाल रखी है तो दूसरी ओर आपदा की इस घड़ी में देश की शान्ति व्यवस्था बनाये रखना पुलिस की अहम जिम्मेदारी है।

ऐसी परिस्थितियों में देश के सामने बहुत सी चुनौतियां खड़ी हुई है और उससे निपटने के लिए हमारा देश प्रयासरत है।

प्रमुख चुनौतियाँ

मानव जीवन की तीन मूलभूत आवश्यकताएं है– भोजन, वस्त्र और आवास। पौष्टिक भोजन, स्वच्छ वस्त्र तथा साफ–सुथरा आवास मानव की कार्यक्षमता एवं जीवन को सुचारू रूप से सक्रिय रखने के लिए न्यूनतम एवं वांछनीय आवश्यकताएं हैं। वर्तमान युग मशीनीकरण का युग है। औधोगिकीकरण के जिनते भी आयाम है, सब मशीन पर निर्भर हैं, लेकिन इन मशीनों की कार्यक्षमता को बनाये रखने अथवा अनुकूल दशाओं के विकास के लिए व्यक्तियों को संतुलित एवं पौष्टिक आहार, शरीर ढकने को पर्याप्त मात्रा में वस्त्र और प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षित रखने के लिए स्वास्थ्यकर आवास की उपलब्धता नितान्त आवशयक है। वर्तमान समय में उपरोक्त मूलभूत सुविधाओं को प्राप्त करना एक चुनौती है।

बेरोजगारी एवं भुखमरी की चुनौतियाँ

हमारे देश में छोटे–बड़े कारखाने और लघु उद्योगों की बहुत बड़ी संख्या है, इस समय औद्योगिक इकाइयां लगभग बंद सी हो गई हैं, जिससे उत्पादन प्रभावित हो रहा है और आर्थिक व्यवस्था चरमरा सी गई है। लॉकडाउन के कारण लोग अपने घरों में बैठे हैं, जिससे कंपनियों में काम नहीं हो पा रहा है और काम न होने से व्यापार प्रभावित हो रहा है, जिसकी वजह से अर्थव्यवस्था कमजोर हो रही है। दिहाड़ी मजदूरों एवं श्रमिकों के सामने बहुत सी समस्याएं आ गई हैं जैसे कि खाने पीने की व्यवस्था, रहने की व्यवस्था तथा बच्चों के पालन पोषण एवं शिक्षा की व्यवस्था आदि संकट उत्पन्न हो गया है। दुकानें बंद हैं, सड़कें वीरान हैं तथा दो वक्त की रोटी, दवाओं या जरूरी सामानों के लिए लोग जूझ रहे हैं। ऐसी विपरीत परिस्थितियां संभवतः पूर्व में कभी नहीं देखी गई हैं।

स्वास्थ्य की चुनौतियाँ

इस महामारी की वजह से व्यक्तियों के सामने उनके स्वास्थ्य को लेकर समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं। सामान्य व्यक्ति भी कहीं ना कहीं मानसिक एवं शारीरिक रूप से बीमार नजर आ रहा है। कोरोना महामारी के मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही हैं जिससे सामान्य एवं गंभीर रूप से बीमार व्यक्तियों का समुचित इलाज एवं देखभाल नहीं हो पा रहा है ऐसी स्थिति में वह मानसिक तनाव के शिकार होते जा रहे हैं।

लॉकडाउन से पूर्व बुजुर्ग एवं बच्चे सुबह एवं शाम को पार्क में या खुले स्थानों पर योगा करने एवं खेलकूद करने के लिए जाया करते थे, जिसके कारण वह शारीरिक एवं मानसिक रूप से फिट रहते थे और अब घरों से बाहर न निकल पाने के कारण उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है। इस तरह से ऐसा जीना पड़ रहा है कि पूरा भारत ही बीमार सा हो गया है। इस स्थिति से उबर कर सामान्य रूप में आने में बहुत वक्त लग सकता है।

आवास एवं रहन –सहन की चुनौतियाँ

ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी बढ़ने के कारण मजदूरों का पलायन विभिन्न प्रदेशों के शहरों की ओर होने लगा एवं मजदूर अपना अस्थाई रूप से आशियाना बनाकर अपने बच्चों के साथ भरण–पोषण कर जीवन यापन कर रहे थे, परंतु कोरोना महामारी के कारण उनका रोजगार एवं व्यवसाय बंद हो गया। उनके पास जो भी पैसा बचा हुआ था उसका प्रयोग लॉकडाउन के दौरान अपने खाने–पीने एवं किराए भाड़े में खर्च कर दिया। दहशत के चलते विभिन्न उद्योगों के श्रमिक जल्द से जल्द अपने–अपने घर लौट जाना चाहते थे, परन्तु आवागमन के साधन बंद होने के कारण जो घर नहीं जा पाए वह पैदल, साईकिल अथवा अन्य साधनों से जाने की कोशिश करने लगे। सैकड़ों किलोमीटर की यात्रा करने एवं पैसे की किल्लत के कारण सभी दाने–दाने को मोहताज हो गए। वह अपने गांव आकर पुनः उसी घर में रहने को मजबूर हो गए चूँकि परिवार बड़ा हो गया है एवं रोजगार न होने के कारण अनेक समस्याएं उत्पन्न होने लगी ऐसे में वह अपने तथा अपने बच्चों की देखभाल अच्छी तरीके से नहीं कर पा रहे हैं, जिससे की आए दिन उनको अनेकों चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। प्रधानमंत्री आवास योजना एवं मुख्यमंत्री आवास योजना की घोषणाएं की जा चुकी हैं लेकिन इसको मूर्त रूप लेने में कितना समय लगेगा यह कह पाना संभव नहीं है।

रोजगार एवं शिक्षा की चुनौतियाँ

लॉकडाउन के कारण देश में रोजगार की कमी आ गई है एवं निजी क्षेत्रों में कर्मचारियों की छटनी की जा रही है जिसके कारण रोजगार कम होते जा रहें हैं। सरकार द्वारा प्रयास किया जा रहा है कि जल्द से जल्द बेरोजगारों को स्वरोजगार के मध्याम से उनको आत्मनिर्भर बनाया जाए जिससे वो अपने परिवार का भरण–पोषण कर सकें।

आज कल कई स्कूल शिक्षा के लिए जूम, माइक्रोसॉफ्ट टीम और गूगल मीट जैसे उभरते वीडियो कॉलिंग एप का प्रयोग करने का निर्णय लिया है। चूंकि स्मार्टफोन ऑनलाइन कक्षाओं के लिए सशर्त बन गए हैं, और समाज के आर्थिकरूप से कमजोर वर्गों (ई0डब्ल्यू0एस) के छात्र जो राष्ट्रीय राजधानी में सरकारी और कम बजट वाले निजी स्कूलों में जाते हैं, वह इस तरीके से पढ़ने के लिए असमर्थ हैं एवं वह संघर्ष कर रहे हैं। उनके माता–पिता जूम क्लासेस जैसे शब्दों से अपरिचित हैं, वीडियो कॉल अधिकांश के लिए बहुत दूर की बात है। शिक्षक, जूम या माइक्रोसॉफ्ट टीम जैसे हैवी डेटा वीडियो ऐप्स के बारे में भी शिकायत कर रहें हैं। इसको सुचारू रूप से संचालित्त करने में हाई स्पीड इन्टरनेट की अवश्यकता होती है जो हर जगह उपलब्ध नही होता जिससे छात्रों को पढ़ाने में व्यवधान उत्पन्न होता है। यह समस्या पूरे शहर की ही नही बल्कि गावों कि भी है। इस तरह से छात्रों को पढ़ाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य होगा।

लॉकडाउन के बाद उत्पन्न संभावित चुनौतियाँ

जैसा कि लॉकडाउन अपने चौथे चरण में प्रवेश करने के लिए तैयार है तथा अभी कितने चरण और लॉकडाउन के होने है यह कह पाना संभव नहीं है यानि कि अभी भी अनिश्चितता कि स्थिति बनी रहेगी। बहरहाल, लॉकडाउन खुलने के बाद एक बार फिर देश में अशान्ति की स्थिति पैदा हो सकती है तथा कोरोना के चलते बड़ी संख्या में बेरोजगारी बढ़ने का भी अनुमान लगाया जा रहा है। अभी लोगों को आने–जाने से रोक दिए जाने के कारण क्राइम का रेट शहरों तथा देहात में कम है। परंतु जैसे ही लॉकडाउन हटाया जाएगा, अपराध में अप्रत्याशित वृद्धि देखने को मिल सकती है। इसके साथ ही चिकित्सा सेवाओं, कृषि, उद्योग धंधो तथा निर्माण कार्य कराने वाली संस्थायो के सामने भी विषम परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं।

सामाजिक चुनौतियाँ

नौकरियों से निकाले गए व्यक्तियों को पुनः वापस नौकरी में रखना भी एक तरह की चुनौती है क्योंकि जब उत्पादन का कार्य नहीं हो रहा है तो ऐसे में उनको दुबारा रोजगार देना संभव प्रतीत नहीं होता है। ऐसी स्थिति में व्यक्तियों के सामने अपने आपको समाज के साथ सामंजस्य बैठा कर चलना दुरूह हो जाएगा। ऐसे व्यक्तियों के सामने रोजी–रोटी की समस्या उत्पन्न हो जाएगी जिसके कारण मजबूरी में वह सभी आत्महत्या करने के लिए मजबूर हो सकते हैं। समाज में आर्थिक असामान्यता में बढ़ोत्तरी हो जाएगी जिससे आम आदमी के लिए सामान्य जीवन–यापन करना कठिन हो जायेगा। कम आय वाली नौकरियां (जैसे रसोइया, नर्स, किराने की दुकान के कर्मचारी, आया) दूर रहकर नहीं की जा सकतीं और उनको प्रत्येक दशा में अपने कार्य क्षेत्र में रहकर कार्य करना पड़ेगा जिसके कारण उन सभी में कोरोना वायरस एवं अन्य बिमारियों के होने की संभावना प्रबल हो जाएगी, जिसके कारण उनको नौकरियों से निकाला जा सकता है और इस कारण से सामाजिक व्यवस्था में असंतुलन पैदा हो जायेगा।

आर्थिक चुनौतियाँ

लॉकडाउन के उपरांत बंद पड़े लघु एवं बड़े उद्योग धंधों को पुनः संचालित करना अपने आप में कठिन कार्य हो जाएगा। पुनः उत्पादन 100% हो पाएगा या नहीं यह कहना संभव नहीं लगता क्योंकि जो कुशल श्रमिक यहां काम कर रहे थे वह अपने–अपने घरों को चले गए हैं और नए श्रमिकों को रखना एवं उनको प्रशिक्षित करना तथा उनसे पूरी क्षमता से कार्य लेना भी काफी महंगा एवं खर्चीला होगा जिसके कारण औधोगिक उत्पादनो में कमी आएगी और अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान पहुंचेगा। भारत सरकार द्वारा उद्योगों को संचालित करने के लिए अपने स्तर से कई प्रकार की योजनाओं को संचालित किया जा रहा है तथा उनको कम ब्याज दरों पर ऋण की सुविधा भी उपलब्ध कराई जा रही है जिससे अर्थव्यवस्था पटरी पर आ सके।

निष्कर्ष

वैश्विक महत्वाकांक्षाओं के कारण भारत को विकसित एवं विकासशील देशो के साथ संबंध बनाए रखना चुनौतीपूर्ण है। कोरोना वायरस के प्रसार ने न केवल स्वास्थ्य क्षेत्र में चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं बल्कि विश्व व्यवस्था के समक्ष चुनौतियों की भिन्न–भिन्न प्रकृति

भी उत्पन्न कर दी है। इन चुनौतियों की प्रकृति कुछ इस तरह से है कि इनके समाधान का मार्ग विभिन्न देशों के आपसी सहयोग व समन्वय से ही प्रशस्त होगा। अब तक की परिस्थितियों से एक बात स्पष्ट हो गई है कि इस विकट चुनौती से निपटने की क्षमता व संसाधन किसी एक देश के पास नहीं हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *https://www.aajtak.in/crime/big-crime/story/corona-covid-19-deadly-virus-pandemic-100-years-death-awe-infection-crime-1047578-2020-04-03*
2. *https://www.magzter.com/article/News/Uday-India-Hindi/1585829611*
3. *https://www.patrika.com/noida-news/crisis-on-small-scale-industries-even-after-lockdown-6019664/*
4. *https://hi.vikaspedia.in/health/nrhm/92891793094092f-93892e93e91c-915940-93894d93593e93894d92594d92f-93892e93894d92f93e90f902*
5. *https://theprint.in/india/education/no-gadgets-no-studies-what-online-classes-mean-for-16-lakh-poor-students-in-delhi-schools/406837/*

Endnotes

1. *https://www.aajtak.in/crime/big-crime/story/corona-covid-19-deadly-virus-pandemic-100-years-death-awe-infection-crime-1047578-2020-04-03*
2. *https://bagpat.nic.in/hi/%E0%A4%95%E0%A5%8B%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A1-19/*
3. *https://www.drishtiias.com/hindi/current-affairs-news-analysis-editorials/news-editorials/09-05-2020/print*